आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 14 | उदयपुर गुरूवार 01 अगस्त 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भंवर, पल्लो छोड़दो म्हारे हाथां में रचरई मेहंदी

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

यदि प्रेम रस है तो सभी रसों की सार्थकता है। इस रस की प्रतीक है मेहंदी। यह प्राप्त होता है बंटने-बंटाने से, रचने-रचाने से, एकाकार होने से। मेहंदी के पत्ते-पत्ते में जैसे रंग समाया हुआ है वैसे ही इसके लगाने से अंग-अंग रंग-संग हो उठता है। हथलेवे की मेहंदी देख कर वर-वधू के प्रेम रस का अनुमान लग जाता है- गाढ़ी ललाई, हल्की ललाई, काली ललाई। गाढ़ा प्रेम, हल्का प्रेम, बेमेल प्रेम। कितनी प्यारी है यह मेहंदी! तभी तो पुरुषों में 'मेहंदालाल' और औरतों में 'मेहंदीबाई' नाम भी बहुत मिलेंगे। यह मेहंदी चूंकि मेह ने दी है इसलिए मेहंदी कहलाई। इन्द्रधनुष के सारे के सारे रंग इस इन्द्र-पुत्री मेहंदी के रंग हैं। मेहंदी को सोने के पलड़े वाले चांदी के तराजू में तोलो। यह मेहंदी स्वर्ग से आई है। मेहंदी सोने की सिलपट्टी पर पिसती है। महीन-महीन मखमल से छनती है और रतन कटोर में गंगाजल के साथ ओली-घोली जाती है। इसके आगे चिरमी, लाल, हिंगलू, सिंदूर, कुंकुम सब के सब पानी भरने लगते हैं। मेहंदी तो मेहंदी है। उसे न कोई मोल पाया है, न कोई तोल पाया है।

मेहंदी बड़ी अजीब रंगीली है। हथेलियों और पगथलियों की रेखाएं घिस गई हैं, इसके गुण गाते-गाते। इसका रंग कितना मजेदार है। ऊपर का रंग हरा पर भीतर का रंग लाल। अन्य रंगों में ऐसा रंग कहां मिलेगा? इसका रंग ही नहीं, रस भी निराला है। नौ रसों का नाम तो बहुत सुना पर एक रस ऐसा रह गया जिसके बिना सब रस सूने हैं। यह रस है प्रेम रस। यदि प्रेम रस है तो सभी रसों की सार्थकता है। इस रस की प्रतीक है मेहंदी। यह रस बड़ा सरस है। यह प्राप्त होता है बंटने-बंटाने से, रचने-रचाने से, एकाकार होने से। इसीलिए कहा गया है- 'प्रेम रस मेहंदी राचणी।'

मेहंदी सुहाग देती है। भाग और सुभाग देती है। इसका रंग धीरे-धीरे चढ़ता है और

धीरे-धीरे उतरता है। इस रंग से दोनों रंगे जाते हैं। लगाने वाला तो रंगता ही है, इसे निरखने वाला भी कम नहीं रंगता है। मेहंदी के पत्ते-पत्ते में जैसे रंग समाया हुआ है वैसे ही इसके लगाने से अंग-अंग रंग-संग हो उठता है। हथलेवे की मेहंदी देख कर वर-वधू के प्रेम रस का अनुमान लग जाता है- गाढ़ी ललाई, हल्की ललाई, काली ललाई। गाढ़ा प्रेम, हल्का प्रेम, बेमेल प्रेम। कितनी प्यारी है यह मेहंदी! तभी तो पुरुषों में 'मेहंदालाल' और औरतों में 'मेहंदीबाई' नाम भी बहुत मिलेंगे।

मेहंदी में भी मेहंदा और मेहंदी दो किस्में होती हैं। मेहंदा की पत्तियां बड़ी तथा कम रचने वाली होती हैं जो ठीक नहीं समझी जाती हैं। मेहंदी पुरुषों के लिए वर्जित है। केवल चटी अंगुली में ही उनके लगाने का चलन है। गीतों में भी यही बात मिलती है परन्तु मैंने तो कई मेलों-ठेलों में ऐसे मेहंदालाल देखे हैं, जिन्होंने मेहंदी से अपनी हथेलियां मेहंदायी।

कुंवारी लड़कियां पगथलियों में मेहंदी नहीं लगातीं। हथेलियों में भी बारीक माण्डने नहीं बनातीं। यदि ऐसा करती हैं तो उनके सावे सूझते नहीं हैं।

लग्न समय पर नहीं आते हैं। नारियों के लिए ही इसके रचाने का विधान है। मेहंदी कभी सोये-सोये नहीं लगाई जाती न धूप में बैठकर ही। दिन को दोपहर-तिपहर में मेहंदी लगाना अपशकुन है।

-शेष पृष्ठ सात पर

CHASING THE CLOUDS

India's first company seeding monsoon clouds in select areas of Water-stressed Rajasthan

Trebling STP capacity to 60 million litres of sewage per day in Udaipur, conserving fresh Water usage in the 'City of Lakes'

Cloud seeding in select areas of Rajasthan, enhancing Water security after low monsoons

India's first dry-tailing waste disposal in a mine under commissioning, saving 2500 m^3 per day of Water

Deepening of lakes & water bodies by 4 lakh m^3 desilting this year, increasing retention of monsoon Water

HIGHLIGHTS - 1st QUARTER RESULTS

PRODUCTION	QUARTER ENDING		
	June 30, 2019	June 30, 2018	Growth
Ore mined (Mn tons)	3.42	3.12	10%
Refined Silver (MT)	159.00	138.00	15%
Refined Lead (KT)	48.00	42.00	13%

Hindustan Zinc: World's second largest integrated Zinc producer and ninth largest integrated Silver producer

Ranked first Globally in Environment in Metals & Mining sector
(Dow Jones Sustainability Index 2018)

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

HINDUSTAN ZINC LIMITED | Regd Office: Yasad Bhawan, Udaipur-313004
PBX No. 0294-6604000 | CIN-L27204RJ1966PLC001208 | www.hzlindia.com

पोथीखाना

रेगिस्तानी भीलों के गीत

डॉ. भुवनेश जैन ने अपने पिता मगराज जैन के साथ रह बाड़मेर क्षेत्र के समग्र रेगिस्तानी क्षेत्र के जनजीवन, जमीन और वनस्पति जगत का न केवल सूक्ष्म पर्यावरणीय परिवेश ही देखा, अपितु उनका बड़े धैर्य और परिश्रमपूर्वक मनोयोग के साथ गहन अध्ययन भी किया है। यह पुस्तक उसी शोधाध्ययन का सुखद योजन है। अपने प्रारम्भ के पुरोवाक् में वे लिखते हैं-

रेगिस्तानी क्षेत्र के भीलों के राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नयन में भागीदारी होने के बावजूद वे इतिहासकारों, संस्कृतिकर्मियों, नृशास्त्रियों, साहित्यकारों, संगीतप्रेमियों की नजर से नदारद रहे।

इस शोध कार्य के लिए बाड़मेर जिले के लूनी नदी के नजदीक स्थित धोलानाड़ा, कच्छ के रण से सटे हाथला, बाड़मेर शहर के नजदीक रहा गांव जूनापतरासर, भारत-पाक सीमा पर स्थित गांव रासबानी एवं घोनिया गांव का चयन किया गया। इन गांवों का चयन भौगोलिक स्थिति, विभिन्न अन्य समुदायों की उन गांवों में उपस्थिति के आधार पर किया गया।

विभिन्न जातियों के साथ भीलों का सम्बन्ध एक-दूसरे को प्रभावित करता भी दिखाई देता है। भीलों का राजपूतों, मुसलमानों, रबारियों तथा व्यापारी वर्ग से सम्बन्ध रहा है। भीलों के ऐतिहासिक अध्ययन के दौरान सैकड़ों गीतों का संकलन किया गया। उन्हीं गीतों को इस पुस्तक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

रेगिस्तानी भीलों के संकलित गीत उनकी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते दिखाई पड़ते हैं। गीतों में तात्कालिक जीवन की कल्पनाएं, मनोकामनाएं, मस्ती, नैसर्गिक जीवन को महसूस किया और समझा जा सकता है। भील शूरवीर रहे हैं तो कला-संगीत में भी उनका कोई सानी नहीं। भीलों के इन संकलित गीतों से नई पीढ़ी को उन्हें अपनी विरासत मिलेगी वहीं इतिहास, संगीत, साहित्य के शोधार्थियों के लिए ये गीत महत्त्वपूर्ण होंगे।

रेगिस्तानी क्षेत्र की भील महिलाओं ने लोकगीतों और लोकनृत्यों को आज भी संजोकर रखा है। भगवान के यश में हरजस करते हैं। ये हरजस मृत्यु के बाद या देवी-देवताओं की स्तुति में सामान्यतया होते हैं। हरजस की परम्परा भीलों में देखने को मिलती है। लीली, नीम्बड़ी, पणियारी, खाली, जमना तीर, पीपली, वंसली प्रमुख गरबी है जो भील महिलाएं व पुरुष नृत्य के साथ गाते हैं।

भील महिलाएं गरबी कृष्ण जन्माष्टमी, शादी-ब्याव, सावण तीज, शिवरात्रि, होली नजला ग्यारस में गाती हैं और नृत्य करती हैं। गरबी के अलावा भील महिलाओं में धमचूड़ो, रमतियो, लुहारियो, धापू जाटण, दलुड़ी छोरी, तेवियो काल, छनुओ काल, ढुलेरियो, बाण्डियो, माडु मेघवाली, मालण, इण्डोणी, अमलीड़ो, हमरचो, आयल भी लोकप्रिय है। तेवियो और छनुओ काल के गीत गाते समय तो सुनने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। विदाई के गीत में आंसू बह पड़ते हैं। वहीं हंसी-मजाक के गीतों से वे संघर्ष भरे जीवन को सरल बना देते हैं।

तीज-त्यौहार, प्रकृति से जुड़े गीतों के साथ विवाह के गीतों में प्रश्न और उत्तर का दौर पुरुष और महिलाओं में चलता है जो अत्यन्त रोचक है। भीलों के गीतों में सरलता भी है तो रोचकता भी, श्रृंगार है तो वीर रस भी, हास्य-विनोद है तो गम्भीरता भी, उल्लास, उमंग है तो शोक भी। श्रद्धा, भक्ति, विरक्ति है तो कल्पनाओं के पंख भी। गीतों ने भीलों के जीवन को जीवन्त बनाया है तो संस्कृति को पहचान भी दी है। भीलों में कबीर, रामदेव, मीरां के भजनों, वाणियों को अपनी बोली में आंचलिकता से प्रस्तुत कर सांस्कृतिक चेतना की शुरूआत की है।

(पृष्ठ-6-7)

प्रस्तुत पुस्तक में विवाह, खेती, अकाल, त्यौहार, देवी-देवता के अतिरिक्त भीलों में प्रचलित पाबूजी के पवाड़े, कबीर की वाणियां, मीरां तथा बाबा रामदेव के भजन, हरजस आदि का संग्रह है। राजस्थान की जनजातियों में यों तो भीलों पर सर्वाधिक लिखा गया है किन्तु रेगिस्तान में बसे भीलों पर इस तरह का यह पहला अध्ययन है। यहां के भीलों का राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन में जो ऐतिहासिक योगदान रहा वह सर्वथा विस्मृत ही रहा। डॉ. भुवनेश ने इस प्रकाशन के माध्यम से जो विविध पक्ष उद्घाटित किये हैं वे आगे आने वाले शोधार्थियों तथा इतिहासज्ञों के लिए दिशासूचक समवेत बनेंगे।

पुस्तक के अन्त में बाड़मेर अंचल के उन गायक-गायिकाओं के नामों की सूची दी गई है जिनसे यह संग्रह समृद्ध बना है। उनकी संख्या 88 है। राजस्थान अध्ययन केन्द्र जयपुर द्वारा प्रकाशित 176 पृष्ठीय सजिल्द इस पुस्तक की कीमत 250 रूपया है। राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर ने इसका मुद्रण कर राजस्थानी साहित्य संस्कृति तथा कला इतिहास के उन अनेक अलभ्य ग्रंथों के अग्रणी कायाकल्पन में इस महत्वपूर्ण प्रकाशन को सम्मिलित किया है।

आम बजट में नये भारत की नींव रखने का प्रयास

- डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत -

मोदी-2 सरकार का पहला आम बजट वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने 05 जुलाई 2019 को लोकसभा के पटल पर रखा। इस बजट में डिजिटल इंडिया, प्रदूषण मुक्त भारत, 2022 तक सबको मकान, कृत्रिम बुद्धिमता, इन्टरनेट ऑफ थींग, बिग डेटा, ई-वेरिफिकेशन, स्किल इंडिया आदि आयामों में सुदृढ़ता प्रदान करते हुए नये भारत की नीवं रखने का प्रयास किया गया।

इस बजट की मूल भावना रिफोर्म, परफोर्म एवं ट्रांसफोर्म इन तीन तथ्यों पर आधारित होना प्रतीत होता है। मोदी सरकार छोटे-छोटे परिवर्तन कर 05 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था को आकार देना चाहती है। यह कैसे सम्भव होगा, इसका रोडमेप बजट में दिखाई नहीं देता, साथ ही भारत बेरोजगारी आर्थिक विषमता जैसी ज्वलंत समस्याओं से जूझ रहा है उनका पर्याप्त समाधान भी इस बजट में दृष्टिगत नहीं होता।

आज भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी के संकेत दिखाई दे रहे हैं। नवम्बर 2016 में विमुद्रीकरण के पश्चात से भारतीय बाजार नकद तरलता की समस्या से अभी भी जुझ रहा है। सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इण्डियन इकोनोमी के अनुसार जनवरी-अप्रैल 2017 के मध्य 1.5 पन्द्रह लाख मिलियन लोगों की नौकरी चली गई।

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के हाल ही में प्रकाशित समकों के अनुसार मई 2019 में औद्योगिक उत्पादन में 3.1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। पेसेन्जर वाहनों में भी मई 2019 में मई 2018 की तुलना में 20.55 प्रतिशत बिक्री कम हो गई। जून माह में निर्यात पिछले 41 माह के न्यूनतम स्तर 25 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया।

पिछले 15 वर्षों में पहली बार जून 2019 को समाप्त तिमाही में नई परियोजनाओं में न्यूनतम निवेश हुआ है। इस वर्ष जून 2019 में भारतीय कम्पनियों ने 43400 करोड़ रुपये का नयी परियोजनाओं में निवेश करने की घोषणा की जो गत वर्ष की तुलना में 87 प्रतिशत कम है। स्टील फार्मास्यूटीकल एफएमसीजी आदि क्षेत्रों की अधिकतर कम्पनियों के लाभों में गिरावट देखी गई। जब अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति हो तो सरकार का प्राथमिक नैतिक दायित्व बनता है कि बजट के माध्यम से देश में निवेश का माहौल पैदा करे ताकि रोजगार सृजित हो सके।

जब 04 जुलाई 2019 को वित्तमंत्री ने लोकसभा में आर्थिक समीक्षा प्रस्तुत की तब उन्होंने भी इन समस्याओं को स्वीकार किया था। भारत में आर्थिक विषमता का स्तर उच्चतम बिन्दु पर है। नौ भारतीयों के पास इतनी दौलत है जो नीचे की आधी आबादी की दौलत के बराबर है।

इस आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए सरकार ने सुपररित लोगों पर सरचार्ज लगाने का प्रयास किया। जिन व्यक्तियों की वार्षिक आय 2 करोड़ से 5 करोड़ के मध्य है उन पर सरचार्ज 15 प्रतिशत से बढ़ाकर 25 प्रतिशत कर दिया परिणामस्वरूप उनकी प्रभावशाली कर की दर 39 प्रतिशत हो गई। इसी तरह 5 करोड़ से ज्यादा कमाने वाले व्यक्तियों पर सरचार्ज 15 प्रतिशत से बढ़ाकर 37 प्रतिशत कर दिया परिणामस्वरूप इनकी प्रभावशाली कर की दर 42.74 प्रतिशत हो गई। दूसरी तरफ ऐसे लोग जिनकी वार्षिक कर योग्य आय 5 लाख रुपये तक है उनको आयकर अधिनियम की धारा 87ए के तहत कर मुक्ति प्रदान की गई।

इससे सरकार जनता को यह संदेश देना चाहती है कि हम गरीब हितैषी हैं लेकिन यहां प्रश्न उठता है कि क्या इस कदम से बेरोजगारी की समस्या एवं आर्थिक विषमता समाप्त होगी, मेरे विचार से नहीं।

किसी भी देश में बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए दो बुनियादी बातों की आवश्यकता होती है विनियोग एवं उपभोग अर्थात् देश में निर्माणी क्षेत्र, सेवा क्षेत्र आदि में सरकारी एवं प्राईवेट विनियोग बढ़ना चाहिए ताकि रोजगार का सृजन हो सके।

सुपररिच पर अत्यधिक कर लगाने से प्राइवेट विनियोग पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होता है। ये लोग कर से बचने के लिए भारत में विनियोग करने के बजाय विदेशों में विनियोग करेंगे। परिणाम स्वरूप देश की अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ता नहीं आयेगी। दूसरी तरफ उपभोग बढ़ाने के लिए भी सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। जनता में उपभोग की मांग बढ़ती है तो उत्पादन बढ़ता है और उत्पादन बढ़ता है तो रोजगार सृजित होते हैं। उपभोग तभी बढ़ेगा तब लोगों के पास अतिरिक्त धन उपलब्ध होगा।

इसलिए सरकार को चाहिए था कि न्यूनतम कर योग्य आय में वृद्धि की जाती। अभी न्यूनतम कर योग्य आय 2,50,000 रुपये है जिसे बढ़ाकर कम से कम 8,00,000 रुपये करनी चाहिए थी। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक करदाता की जेब में लगभग 72,500 रुपये अतिरिक्त आता।

कर निर्धारण वर्ष 2018-19 में लगभग 5.44 करोड़ व्यक्तियों ने रिटर्न फाइल किया। इसमें से लगभग 44 प्रतिशत लोग जीरो टैक्स रिटर्न फाइल करते हैं। परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 3 करोड़ लोगों के पास कुल 2,17,500 करोड़ अतिरिक्त आता। अतिरिक्त पैसा आने पर व्यक्ति या तो विनियोग करता या फिर खर्च करता है।

दोनों ही स्थितियों में देश में आर्थिक वृद्धि में तेजी आती। निसन्देह ऐसा करने से सरकार पर आर्थिक बोझ बढ़ता है किन्तु इस हानि की आंशिक पूर्ति सुपररिच कर से ; लगभग 5,000 करोड़ हो जाती और शेष के लिए पोल्यूटेड इन्डस्ट्रीज पर कार्बन कर लगाकर पूरी की जा सकती थी। आज हर आर्थिक क्षेत्र में मंदी का दौर चल रहा है।

उपभोग न्यूनतम स्तर पर चला गया है। यदि आर्थिक गतिविधि को गति मिलती है तो सरकार को, जनता को, उद्योगपतियों को, निवेशकों आदि को फायदा होता है। देश की बेरोजगारी एवं आर्थिक विषमता को समाप्त करने के लिए विनियोग एवं उपभोग की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए, तभी हमारे प्रधानमंत्री का 2014 तक 05 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था का सपना साकार हो पाएगा।

शायर इकबाल सागर सम्मानित

गजल एकेडमी एवं महाराणा कुंभा संगीत परिषद द्वारा कुंभा भवन में आयोजित एक समारोह में शायर एवं साहित्यकार

इकबाल सागर को उनकी उल्लेखनीय सेवाओ के लिये सम्मानित किया गया। पुरूस्कार स्वरूप डॉ. सागर को उपरना, स्मृतिचिन्ह एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने इकबाल सागर के दीर्घकालीन अवदान को रेखांकित करते हुए उनके दीर्घजीवी भविष्य की शुभकामना की।

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को लंदन में 'भारत गौरव सम्मान'

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर के ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को लन्दन की हाउस ऑफ कॉमन्स, ब्रिटिश पार्लियामेंट में ब्रिटेन के सांसद विजेन्द्र शर्मा, ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन की जूनियर मंत्री बोरोनेस वर्मा, संस्कृति युवा संस्थान के पं. सुरेश मिश्रा व अन्य अतिथियों ने 'भारत गौरव सम्मान-2019' से सम्मानित किया।

स्मृतियों के शिखर (81) : डॉ. महेन्द्र भानावत

धर्मसंघ की सेवा में सवाये बनते सवाईलाल पोखरना

प्रत्येक के साथ तो नहीं होता है किन्तु जिनके साथ होता है वे रोड़ी से रतन, कंकड़ से कंचन और कीचड़ से कमल बन समाज को सुवासित करते हैं। अपना तो सभी भरते हैं पर दूसरों के लिए दूने उत्साह से दबंग बन काम करने वाले कम ही होते हैं।

भक्त तो अनेक होते हैं पर भगवान जिसे नेक समझ अपना लेते हैं, ऊंगलियों पर भी बमुश्किल गिने जाते हैं। माला में जैसे अनेक मणिये होते हैं पर प्रथम मणिया कोई होनहार ही बन सकता है। स्थापित होकर विस्थापित होते अनेक लोग मिलेंगे पर कुछ होते हैं जो सदैव ही आंख के मोती और अधर की लालिमा बने रहते हैं।

सवाईलाल पोखरना जब भी मिलते हैं मुझे ऐसे ही छविराम लगते हैं। उनसे मेरा परिचय बहुत बाद में हुआ। अपने गांव के होने पर भी मुझे उनके पिताश्री विजयसिंहजी अधिक याद आते हैं जो बाद में अपनी नेत्र ज्योति खो चुके थे मगर मैं जब भी पोखरना वाली गली से गुजरता, वे मुझे पहचान लेते।

रक्षाबन्धन की श्रावणी पूर्णिमा, 06 अगस्त 1941 को जन्मे सवाईलाल को बड़े संकोच में आकर पिताश्री के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि लकड़ी के सहारे वे घर-बाहर का अपना सारा काम करते कभी हार नहीं खाई।

उनके अन्तरमन में ज्योति की ही ऐसी कुछ प्रभावना थी कि वे घोड़े पर बैठकर अकेले आसपास के गांवों तथा बड़ीसादड़ी, छोटीसादड़ी तक की यात्रा कर लेते। कोर्ट-कचहरी, खेती-बाड़ी के कामों को निपटाते तथा परिवार का भरण-पोषण करते वे बड़े चुस्त लगते।

विशिष्ट अवसर पर वे अच्छी पोशाक में सजेधजे तो लगते ही पर गले में सोने की सौलह तोले वाली गोप बड़ी शोभा ललित लगती। पोखरना बोले, कोई डेढ़-दो हजार जैन युवकों को विवाह अवसर पर जब वे दूल्हा बनते, यह गोप पहनाकर बड़े खुश होते।

वहां एक गोबर्‌या था। वह भी सफा अन्धा था मगर आम के पेड़ पर चढ़कर आम उतार लेता था। कुए-कुई में कोई चीज गिर जाती तो उसे निकाल ले आता था। उसकी आंखें बन्द रहती थीं मगर बाबूसा विजयसिंहजी की आंखें सदैव खुली रहतीं। वे छोटी और गोल थीं मगर हर समय अपनी खुलती-मींचती पलकों में चकमक सी चमक का उजियारा देती लगती थीं।

तब गांव में, समाज में पोखरना परिवार का बड़ा दबदबा था। उनकी बहुत बड़ी पिरोल पोखरना-परिवारों से शोभायमान थी। उन्हीं के पास के नोहरे में तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वी विचरण कर चौमासा करते।

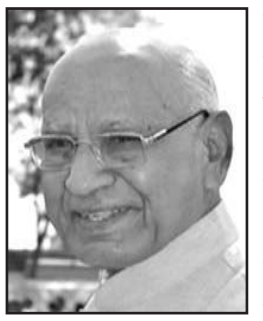

वहां अपनी मां के साथ मैं भी सुबह ही सुबह महाराज के दर्शन करना फिर उनके व्याख्यान सुनना, सामायिक करना जैसे संस्कार लम्बे समय तक धरोहर की तरह मुझ में धर्मनिष्ठ होते रहे। बचपन की आठवीं तक की पढ़ाई मैंने अपने गांव में ही की फिर ज्ञानार्थ प्रवेश और सेवार्थ प्रस्थान बाहर ही बाहर रहा।

सवाई बाबू अधिक नहीं पढ़े तो अधिक सरकार में भी नहीं रहे। उदयपुर में सन् 1961 की जनगणना की 150 रूपये वाली सुपरवाइजरी और सन् 1962 में सिंचाई विभाग की 250 रूपये माहवारी स्टोर इन्चार्जी उन्हें आकर्षित नहीं कर पाई।

उनकी ललाट पर लिखा फतहनगर में जीवन को फतह करने का सो राज एजेन्सी प्रारम्भ की। फिर कृषि मशीनरी की ओर बढ़ने का सोच राजस्थान मशीनरीज का व्यवसाय शुरू किया। नाथद्वारा में शुगर मिल की स्थापना की और ऐसे ही श्रीनाथ के नाम वाणिज्य शुरू किया।

बीच में उन्हें एक सनक ऐसी चढ़ी कि आयुर्वेद सेवाश्रम के उत्पादन की बिक्री का जोश लिये सर्वाधिक बिक्री का रेकॉर्ड कायम करने पर स्वर्ण पदक और वेस्पा स्कूटर बैठने को मिला। यह कमाल ऐसा रहा कि इन्दौर में कम्पनी ने मार्केटिंग का काम दिया। उसमें भी अपनी चमक सितारी उपलब्धि दी। यह सब कर लिया तो उनका मन भी भर गया।

यह सब तो वैकल्पिक अपने निजी कारोबार की उपलब्धियां रहीं पर पोखरनाजी को लगा कि उपलब्धियों का असली मजा तो समाज सेवा में है। अनेक ऐसे कार्य हैं जो किये जाने हैं। घर के संस्कार बड़े शीलव्रत थे सो तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्यश्री तुलसीजी ने इनकी समर्पणभावी सुरुचि को परखा और मेवाड़ कान्फ्रेंस का अध्यक्ष पद प्रदान किया जिसका उन्होंने छह वर्षों तक सेवारोहण किया।

आचार्यश्री तुलसीजी ही एक ऐसे आचार्य थे जिन्होंने परम्पराजीवी सुलक्षणीय आदर्शों को रखते हुए अनेक नये आयामों का श्रीगणेश कर सर्वथा नई धर्म-क्रान्ति का सूत्रपात किया। धर्म, समाज की रूढ़िवादिता की जकड़न का चोला हटाकर नये आधुनिक संघ-संगठन की नींव रखी और राजनीति में भी धर्म-अध्यात्म की पीठिका देकर राजनेताओं को अपनी ओर आकर्षित कर अनेक समस्याओं के निराकरण का सुगम मार्ग दिया।

कहना नहीं होगा कि जैन जगत के अलग-अलग सम्प्रदायों तथा संगठनों में आचार्य तुलसी ने अपने धर्मसंघ की विश्वव्यापी पहचान और प्रतिष्ठा देकर उसे आगे तक की आधुनिकता देने का शंख-भस्म दे दिया जिसका निर्वाह बाद के आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्य महाश्रमण बड़ी बुलन्दगी के साथ किये हुए हैं।

सवाईलाल पोखरना लाडनूं में जैन विश्व भारती से लेकर तेरापंथ प्रबोध मण्डल, तेरापंथ राष्ट्रीय स्मारक समिति के सर्वोच्च महत्त्वपूर्ण दायित्वों का संचालन निर्देशन करते रहे। अन्य क्षेत्रों की अणुव्रत समितियों, सभाओं तथा मण्डलों से जुड़े। अन्य अनेक समितियों, संस्थानों में संरक्षक एवं ट्रस्टी के रूप में उनकी भूमिका ने विकास के अनेक आयाम छलांगे।

अपने जन्म स्थान कानोड़ के लिए पोखरनाजी की सर्वोच्च उपलब्धि सन् 1985 में कानोड़ में आचार्य तुलसी अमृत निकेतन, तुलसी अमृत छात्रावास के रूप में बालक-बालिकाओं के लिए आदर्श एवं उत्तम नैतिक शिक्षा संस्कारों का स्कूल प्रारम्भ करना रही। इसका यह लाभ रहा कि प्रति वर्ष ही बोर्ड की परीक्षा में यहां के छात्र मेरिट में आते रहे और अब इस वर्ष नये सत्र जुलाई से कला, वाणिज्य तथा विज्ञान तीनों संकायों में महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया है।

आर्थिक दृष्टि से सदैव पिछड़ा रहा मेवाड़ क्षेत्र का कानोड़ नाम शिक्षा नगरी के रूप में दूर-दूर तक ख्याति लिये है। आचार्य तुलसी का वरदहस्त तो रहा ही पर रूढ़िवादी परम्पराओं को त्यागने वाली विधवा महिलाओं की वैधव्यजनित काली पोशाक छुड़ाकर उन्हें श्वेत परिधान में लाने का भगीरथ प्रयास ऐतिहासिक उपलब्धि ही बन गया।

सबसे पहले तो मेरी माताजी डेलूबाई ने ही अपना वैधव्य दर्शन काली कांचली, काली साड़ी और काला घाघरा ही छोड़कर आचार्यश्री की चाह को मूर्त रूप देते श्वेत-परिवेश धारण कर लिया। इसे देखते-देखते सभी विधवा महिलाएं काजल कांचली त्याग श्वेत-निर्मली गन गई।

संघ व संघपति के प्रति अटूट आस्था और आज्ञा-आशाओं की अक्षरशः पालना करते हुए पोखरनाजी का स्पष्टवादी व्यक्तित्व संघर्षों से डटकर मुकाबला करने की असीम क्षमता तथा बेबाक बने रहने के कारण निखार पाता रहा। इसके साथ-साथ उनके सौम्य व्यवहार ने साधु-सन्तों तथा सामाजिकों में आश और विश्वास का अटूट भरोसा दिया। वे सबके अति निकट और विश्वास के स्वर्ण सुपात्र बने।

तेरपंथ की उद्‌गम स्थली केलवा की अंधेरी ओवरी में तेरापंथ पंथ के आद्य प्रवर्तक प्रथम आचार्य भिक्षु स्वामी के स्मृति संस्थान के ट्रस्टी एवं अध्यक्ष के रूप में सवाई बाबू का योगदान शिलांकित ही कहा जाना चाहिये।

इसी भूमि पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पोखरनाजी को शासनसेवी अलंकरण का सम्बोधन देते कहा था- 'सवाईलाल हमारे धर्मसंघ के समर्पित एक ऐसे आस्थावान सुश्रावक हैं जिन्हें जब-जब भी आचार्य द्वारा जो कार्य दिया गया वह इन्होंने अपनी क्षमता से अधिक सवाया करके दिखाया। ऐसे आदर्श समाजरत्न से अन्य भाई बहिन भी प्रेरणा लेकर जिन शासन और समाज को विशिष्ट पहचान द्वारा गौरवपूर्ण बनायेंगे।'

आचार्य तुलसी ने भी गंगाशहर में अपने अन्तिम प्रवचन में विशाल धर्मसभा में उनकी सेवाओं का उल्लेख कर उन्हें अत्यन्त विनीत वन्दनीय भावभीना कर दिया था। कुछ ऐसा ही उल्लेख 31 जनवरी 2017 को सिलीगुड़ी की विशाल जनसभा में आचार्य महाश्रमण ने किया था। यह विशिष्ट अवसर पोखरनाजी के सम्मान समारोह का था जिसमें उन्हें एक लाख रूपये का मनोहरी देवी डागा समाज सेवा सम्मान प्रदान किया गया था।

सवाईलालजी बताते हैं कि सेवा का भाव मौनव्रती होना चाहिये। किसी भी धर्म का प्रभाव और सींचन उसकी आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है जो आत्मा का दरसाव है।

सम्मान पुरस्कार और प्रतिष्ठा के सन्दर्भ कई बार सेवा सन्दर्भ को आहत करते भटकाव देते हैं अतः जहां तक बने उस पहचान के फ्रंटडोर को त्यागकर नीतिवान श्रावक को बेकडोर की शरण लेनी चाहिए।

गुफाओं और कन्दराओं में तपे-खपे साधकों की तरह सेवा को भी साधना मानते हुए उनका कथन भी सार्थक जीवन का सोपान है। वे कहते हैं, पुण्य की जड़ सदा हरी रहती है पर मनुष्य का पुण्य धर्म में है। धर्म का पुण्य अध्यात्म में है। अध्यात्म का पुण्य आत्म संधान में है और उसी संधान की डंडी में वह परम है और वह परम ही अर्हम है।

घर के संस्कार बड़े शीलव्रत थे सो तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्यश्री तुलसीजी ने सवाईलालजी की समर्पणभावी सुरुचि को परखा और मेवाड़ कान्फ्रेंस का अध्यक्ष पद प्रदान किया जिसका उन्होंने छह वर्षों तक सेवारोहण किया। पोखरना लाडनूं में जैन विश्व भारती से लेकर तेरापंथ प्रबोध मण्डल, तेरापंथ राष्ट्रीय स्मारक समिति के सर्वोच्च महत्त्वपूर्ण दायित्वों का संचालन निर्देशन करते रहे। अन्य क्षेत्रों की अणुव्रत समितियों, सभाओं तथा मण्डलों से जुड़े। अन्य अनेक समितियों, संस्थानों में संरक्षक एवं ट्रस्टी के रूप में उनकी भूमिका ने विकास के अनेक आयाम छलांगे। पोखरनाजी की सर्वोच्च उपलब्धि सन् 1985 में कानोड़ में आचार्य तुलसी अमृत निकेतन, तुलसी अमृत छात्रावास के रूप में बालक-बालिकाओं के लिए आदर्श एवं उत्तम नैतिक शिक्षा संस्कारों का स्कूल प्रारम्भ करना रही। इसका यह लाभ रहा कि प्रति वर्ष ही बोर्ड की परीक्षा में यहां के छात्र मेरिट में आते रहे। सवाईलालजी बताते हैं कि सेवा का भाव मौनव्रती होना चाहिये। किसी भी धर्म का प्रभाव और सींचन उसकी आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है जो आत्मा का दरसाव है। सम्मान पुरस्कार और प्रतिष्ठा के सन्दर्भ कई बार सेवा सन्दर्भ को आहत करते भटकाव देते हैं अतः जहां तक बने उस पहचान के फ्रंटडोर को त्यागकर नीतिवान श्रावक को बेकडोर की शरण लेनी चाहिए।

शब्द रंजन
उदयपुर, गुरूवार 01 अगस्त 2019

सम्पादकीय

परंपरा के देश में हम

सभी जानते हैं कि भारत परम्पराओं का देश है और इसी वजह से इसकी पहचान पूरे विश्व में बनी हुई है किन्तु परम्परा को ठीक से समझने वाले और उसको परिभाषित करने वाले विद्वानों ने बहुत अधिक विचार नहीं किया। बहुत से तो केवल यही समझ बैठे हैं कि सैकड़ों वर्षों से जो कुछ चला आ रहा है, वह अभी भी चला आ रहा है और उसके पीछे हमारी दृढ़ धारणा, आस्था, विश्वास और विचारशक्ति है।

यह भी कि हमारे बड़ेरों, पूर्व पुरुषों याकि पुरोधाओं ने अपने कर्मठ पुरुषार्थ और समय, समझ से जो सामाजिक-पारिवारिक दृष्टि बनाई और उसे पोषित की वही प्रवाह आगे वाली पीढ़ी द्वारा संरक्षित एवं सुरक्षित रूप से बनाये रखा। जो मर्यादाएं या जीवनमूल्य उन्होंने बनाये उन्हें हमने खण्डित नहीं कर सतत प्रवहमान किये रखा।

लेकिन यह धारणा भी पूर्णत: सत्य परिलक्षित नहीं होती। जब समय का चक्का स्थिर नहीं होकर निरन्तर परिवर्तनशील है तब परम्परा का अर्थ भी परिवर्तनीय बदलाव की धड़कन से जुड़ा लगता है।

यह दिगर बात है कि हम उसे कहां तक देख अथवा पकड़ पा रहे हैं। परम्परा के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो पर के बाद का पर अर्थात् बाद और उसके बाद से है। इससे नितान्त अतीतप्रियता का सन्दर्भ नहीं लिया जा सकता। समय ठहरा हुआ स्थिर नहीं है। वह बदल रहा है पर हमारी मुट्ठी में उस तरह की पकड़-धकड़ से परे है तो कैद नहीं किया जा सकता।

कहा तो यह भी जाता है कि अपने को आधुनिक से आधुनिक तथा प्रगतिशील से प्रगतिशील कहे जाने वाले समाजों में भी परम्परा जीवित रहती है। ऐसा मानने वाले क्या यह मानते हैं कि परम्परा का खण्डन नहीं होता।

उसका मण्डन होना ही उसका बने रहना है। इससे लगता है कि परम्परा की परख के लिए हमें अपने दृष्टिकोण को व्यापक उदार बनाना होगा। सीमित और संकीर्ण दृष्टि से हमारा आकलन दोषपूर्ण ही कहा जायेगा। इससे एक तथ्य तो यह घटित हुआ लगता है कि अपनी विरासत का हर सन्दर्भ जो उपयोगी नहीं रहा उसे घटाते हुए उसमें कुछ नया जोड़ते उसे उपयोगी बनाये रखना भी है।

यह ठीक उसी तरह होगा जैसे किसी पुराने हुए अनुपयोगी कपड़े को हटाकर उसकी जगह नया अथवा उस पुराने से थोड़ा अधिक नया जोड़ते उसे उपयोगी बनाये रखना होता है जिसे कापा लगाना या उस स्थान विशेष को रफ्फू बनाते पुन: उपयोग में लेना होता है।

इसे सफलतापूर्वक यों भी समझ सकते हैं कि नदी का जो अनवरत बहाव हम देखते हैं उसमें कितना पानी पुराना और कितना नया मिला हुआ है, हम नहीं कह सकते पर बहता पानी निर्मला बना हुआ है। यही हमारी परम्परा की व्यावहारिक बौद्धिकता है जिसे हम अपनी पुरातनता को बचाते हुए उसमें नवीनता का परिदर्शन करते चलते चलायमान होते रहते हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जो परिवर्तन हम प्रकृति में, हमारे समय में देख रहे हैं वह अवश्यंभावी लगते हुए भी हमें बेखबर दिये रहता है। यह खबर में बेखबर का होना, लगना ही परम्परा है।

क़मर के अस्सी वर्ष

एक उम्र के बाद की एक उम्र बहता पानी निर्मला की बजाय ठहरा पानी गलगला ही होता है। अस्सी के बाद की रस्सी को किसी प्रतियोगिता की खींचतान के लिए काम में लेने की बजाय पुरानी खूंटी पर तानकर रख देना ही समझदारी है सो क़मर मेवाड़ी के साथ मैं भी और हम जैसे अन्य दमखमदार भी इसी तेवर में घर के कांच में सजे माछरी-दर्शन की तरह हैं।

क़मर एक मामूली आदमी है जिसने बचपन बहुत मस्ती और खिलंदड़ेपन में व्यतीत किया। उसमें ये दोनों गुण बचपन को छोड़ उसके बड़ेपन से लेकर अब तक के पन यानी नहीं तो भी पिछले पांच, साढ़ा पांच, पौने छह दशक से मैं देख रहा हूं। क़मर को मैंने कभी मुर्देपन की ठठरी बने रोवणी रागिनी अलापते नहीं देखा। घर-गिरस्थी के उघड़े बिखरे भटकन खाते झंझावातों में मायावी होते नहीं देखा। देखा तो सदैव एक तरोताजा पानीदार फूल की तरह सदाबहार खिलखिलाहट देते देखा।

क़मर मेवाड़ी के खेमे के आधे साथी तो मेरे भी मित्र बने रहे। कुछ आधे से मेरा सीधा परिचय नहीं रहा। कुछ से क़मर से प्रकारान्तर परिचय पाकर सुखद किन्तु संवादहीन ही बना रहा।

कुल मिलाकर क़मर की मेरी दोस्ती जलाराम की उस पोटली की तरह बनी हुई है जो अनछुई रहकर भी छुवन सी छरहरी लिये है। एक यारबाज खुशहाल दोस्ती का इससे बड़ा मुकम्मिल मजा और क्या हो सकता है! यह दोस्ती लबालब पानी से भरे मनोरम कुंड में गंठा लगाने की गूंज देती है। उसके पैंदे में पहुंच गुलछी खाने की नहीं। तीर्थयात्रा में जैसे सभी हर-हर महादेव की रट लगाते होते हैं।

क़मर मेवाड़ी के अस्सी वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित शानदार जलसे में मैं उपस्थित नहीं हो सका पर उस पर केन्द्रित 'सृजनकुंज' का माधव नागदा के अतिथ सम्पादन वाला अंक पाकर तबीयत खुशबाग हो गई।

क़मर के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व का कलरव देता यह अंक क़मर के चहेतों के लिए बड़ा ही उपयोगी, मूल्यवान और अनमोल परख पहचान देने वाला मानक एक तरह से ग्रंथ ही बन पड़ा है। बधाई। - **म. भा.**

उत्तराखंड में आस्था का अनोखा अंदाज

-दिनेश रावत -

देवभूमि उत्तराखंड के कुमाऊँ मण्डलान्तर्गत पंचाचूली हिम शिखरों के तहहटी में बसे छिपला केदार के आधिपत्य को स्वीकारने वाले गौरी गंगा के बायीं ओर धारचूला-मुनस्यारी क्षेत्र में श्रावण की प्रथम तिथि को गौधुली बेला में घरों, गौशालाओं के प्रवेश द्वारों, खिड़कियों, रोशनदानों तथा आवागमन के सभी मार्गों पर एक विशेष प्रकार की काँटिली झांड़ी 'झिंझिड़ा काँड़ौ' लगाने की परम्परा प्रचलित है। इसके मूल में परिवारिक सुरक्षा एवं पशु-मवेशियों की रक्षा का भाव समाहित है।

मान्यता है कि आरम्भिक काल में इस क्षेत्र में राक्षसों का राज हुआ करता था। लोकदेवताओं ने ही इस क्षेत्र विशेष में आतंक मचाने वाले राक्षसों का वध करके राक्षसों के आतंक से मुक्त करवाया था किन्तु उनका भय बाद में भी विद्यमान रहा।

श्रावण आगमन पर पहलीबार जब ये देवी-देवता कैलाश प्रस्थान को तैयार होते हैं तो क्षेत्रवासी भयभीत हो उठते हैं। इसी कारण आज भी देवता क्षेत्रवासियों को 'झिंझिरा' की टहनियाँ तोड़ कर देते हैं और अपनी वापसी तक उन्हें घर के मुख्य द्वारों पर लगाये रखने की सलाह देकर सुरक्षा का वचन देते हैं।

कैलाश भ्रमण पर गये देवता भाद्रपद संक्रांति को वापस पहुँचते हैं। इसी दिन लोग घरों से इन कांटों को भी निकाल फेंकते हैं। देवों के स्वागत, सत्कार में मंदिरों में समस्त ग्राम्यजन हाथों में धूप, दीप, गंध, अक्षत, पत्र-पुष्प से सुसज्जित थाल, गौमुत्र, गौदुग्ध और आस-पास उगे ऋतु फलों यथा- आड़ू, अखरोट, माल्टा, मौसमी, नारंगी, अनार, दाड़ीम, मक्का, ककड़ी इत्यादि की टोकरियाँ भर कर पहुँचते हैं। मंदिरों की साफ-सफाई की जाती हैं।

देवागमन की खुशी में 'झोड़ा' गायन शुरू होता है। मंदिर के 'थामी' अर्थात पुजारी और 'बौण्या' यानि माली अर्थात् जिस व्यक्ति के शरीर में देवता अवतरित होते हैं, उसके द्वारा पूजन, वंदन होता है। कपाट खोलने को 'बाड़ उगढ़ाई' तथा देव अवतरण की प्रक्रिया को 'काँपना' कहा जाता है। मान्यता है कि यात्रा अवधि में देव व दानवों के मध्य आज भी क्षेत्र की खुशहाली को लेकर एक अलौकिक युद्ध होता है, जिसे 'जुआ-पासा' खेलना कहा जाता है। अवतरित देवता अपने-अपने श्रीमुखों से पूरा वृतांत सुनाते हुए लोकवासियों को जन-मानस, पशु-मवेशी, फसल चक्र, उत्पादन, जंगली जानवरों के प्रकोप से परिचित करवाते हैं साथ ही फसलों को किस प्रजाति के जानवरों से अधिक खतरा हो सकता है, उसके प्रति भी आगाह करते हैं।

यात्रा वृतांत पूरा होने के पश्चात ग्राम्यजनों द्वारा लाये गये फलों का भोग लगाया जाता है। फलों को एक चादर के ऊपर रखते हैं। उसके कौनों को पकड़ कर सभी फलों को आकाश की ओर उछालते हैं। देवताओं द्वारा उछाले गये फलों को हवा में ही पकड़ने के लिए जन-समुदाय टूट पड़ता है। महिलाओं द्वारा चाँचड़ी शुरू कर दी जाती है, जो देर रात तक चलती रहती है।

सॉफ्टवेयर असिस्टेंस की मदद से सर्जरी

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने घुटनों में चोट के कारण विकृति की

समस्या से पीड़ित दो रोगियों को सॉफ्टवेयर असिस्टेंस की मदद से सर्जरी कर उनको नया जीवन दिया है। दोनों मरीज आसानी से चल फिरने में समर्थ हैं। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि उदयपुर निवासी 16 वर्षीय तारा डांगी के घुटने में चोट थी, जो उनके चलने और दौड़ने में बाधक बन रही थी। उसके एक्स-रे में पाया गया कि घुटने की यह विकृति, उनकी दोनों डिस्टल फीमर हड्डियों और प्रॉक्सिमल टिबिया हड्डियों, वैल्गस विकृति के चलते थी। एक अन्य मामला, चंदौली, उत्तरप्रदेश की 20 वर्षीय अनुराधा तिवारी का है। उसके सेरेब्रल पाल्सी के साथ डिस्टल फीमर की तीन आयामी विकृति थी। इसकी करेक्शनल सर्जरी नारायण सेवा में हुई थी और अब अनुराधा आराम से चलने में सक्षम है, ऑपरेट किए गए शरीर के अंग पर पूरा भार वहन कर सकती है। एम.एस. ऑर्थो डॉ. अंकित चौहान ने बताया कि हमने प्री-सर्जिकल प्लान के लिए सॉफ्टवेयर और ऐप द्वारा नई रणनीति के साथ दो जटिल मामलों को ऑपरेट किया है। दोनों करेक्शनल सर्जरी के बाद अगले दिन से फिजियोथेरेपी शुरू की गई और सर्जरी के तीसरे सप्ताह के बाद से तारा चलने जैसी हो गई।

वेदांता स्नातकोत्तर महाविद्यालय की 3000 छात्राओं को मिले लेपटॉप

उदयपुर। वेदांता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रींगस की 3000 छात्राओं को मुख्य अतिथि पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीएल शर्मा, हिन्दुस्तान जिंक की चेयरमेन एवं वेदांता फाउण्डेशन की ट्रस्टी श्रीमती किरण अग्रवाल एवं ट्रस्टी सुमन डीडवानिया ने लेपटॉप वितरित किये। इन लेपटॉप से छात्राएं हाइटेक होकर वर्तमान समय की आवश्यकता अनुरूप अपनी शिक्षा और ज्ञान में और बढ़ोतरी कर सकेगीं।

इस अवसर पर प्रो. बीएल शर्मा ने कहा कि छात्राओं को शिक्षित करने के पुनीत कार्य में वेदांता हमेशा से अग्रणीय रहा है। उन्होंने छात्राओं से आह्वान किया कि यदि अच्छा व्यक्ति बनना है तो साधनयुक्त होना आवश्यक है। श्रीमती किरण अग्रवाल ने छात्राओं को मन लगाकर अध्ययन करने एवं अपने अभिभावकों के स्वप्नों को साकार करने के लिए कहा। उन्होंने छात्राओं को लक्ष्य निर्धारित कर उसी पर केन्द्रीत होने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती सुमन डीडवानिया ने छात्राओं को वेदांता फाउण्डेशन द्वारा संचालित कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अल्का सक्सेना, सचिव एसएन पारीक, उपप्राचार्य डॉ अर्चना शर्मा भी उपस्थित रहे।

वैष्णोदेवी का विमल वैभव

तीर्थयात्रा कहीं की हो, पुण्यधर्मी होती है। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि के लिए हर

भारतीय के मन में तीर्थयात्रा का संकल्प रहा है। बड़े भैय्या शब्दांक के जन्म पर मम्मी रंजना ने वैष्णोदेवी दर्शन करने की भावना ले रखी थी। जोग-संजोग बनते 18 वर्ष हो गए सो इस बार 15 से 19 जुलाई तक का यात्रा वास रहा।

पापा डॉ. तुक्तक ने उचित समझा सो भुवा डॉ. कहानी, फूफा जितेन्द्रजी तथा काव्या एवं युक्ता बहिनों के साथ रेल द्वारा रवानगी हुई। उदयपुर से जम्मू और वहां से टेक्सी द्वारा कटरा पहुंचे। वहां से दिन को कोई 7 घण्टे की घोड़ा चढ़ाई करते रात्रि को ग्यारह बजे करीब माता वैष्णोदेवी के दर्शन कर अभिभूत हो गए।

16 जुलाई को 5200 फीट की ऊंची चढ़ाई की व्यवस्था बहुत अच्छी रही। प्राय: पैदल यात्री ही झुण्ड के झुण्ड रूप में मिले मगर हम घोड़े पर सवार हो चढ़े। बीच रास्ते अर्द्धकुवारी से ई-रिक्शा भी मिलता है। छोटे-छोटे बच्चों के लिए ट्रोली उपलब्ध है और बुजुर्गों-बूढ़ों के लिए पालकी सुलभ रहती है। पूरा रास्ता अनेक तरह की दुकानों से जगमगाहट देता है। पैदलियों का मार्ग अलग है। रास्ते में रास्ते भी मिलते हैं। जरा सी चूक होने पर साथ वाला भी बिछुड़ता लगता है। हमारे साथ यही हुआ।

काव्या, युक्ता की यात्रा भिन्न बन गई। उन्होंने शुरू में घोड़ा लिया फिर पैदल चढ़े जबकि हम प्रारम्भ में पैदल चले फिर घोड़ा लिया। मैं और शब्दांक साथ चले। काव्या, युक्ता भी अलग से साथ चली पर आगे जाकर बिछुड़ गई। मोबाईल से भी सम्पर्क नहीं हो सका सो चिन्ता-परेशानी हुई पर कुछ देरी की। मम्मी ने दो बार दर्शन किये। दूसरी बार हम दोनों भाइयों को लेकर चलीं पर दोनों बार की गुफाएं अलग-अलग थीं।

चढ़ाई के वक्त घना कोहरा छाया था। इतना घना कि एक-दूसरा भी बमुश्किल दिखाई दे रहा था। चीड़ तथा गिर वृक्षों से पूरा नजारा खुश नुमा था। गुफाओं में जाने का शगुन ही और है। लाइटिंग की जगमगाहट से सभी प्रसन्न-प्रफुल्ल थे। मन्दिर-दर्शन संध्या 6 से 9 बजे तक बन्द रहते हैं। शेष हर समय दर्शन खुले रहने की अच्छी व्यवस्था है।

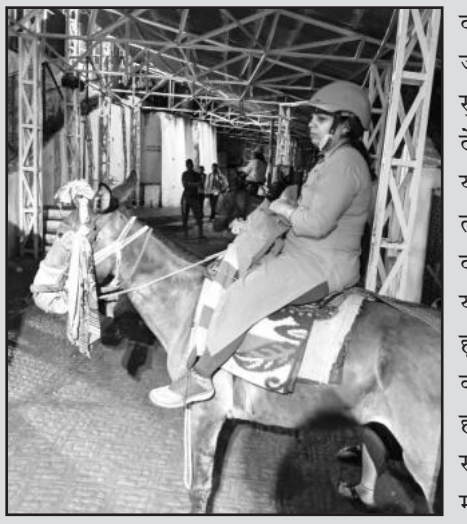

प्रत्येक दर्शनार्थी को मन्दिर मण्डल की ओर से निशुल्क देवी का सिक्का तथा प्रसाद का छोटा पैकेट दिया जाता है। यों देवी के प्रसाद में चावल की फूली तथा छुहारे मुख्य हैं जिसके पैकेट सशुल्क सुलभ हैं। चढ़ाई के वक्त तीन-चार बार हर दर्शनार्थी को चैकपोस्ट से गुजरना पड़ता है। सुविधा तथा सुरक्षा की दृष्टि से यह व्यवस्था उत्तम लगी।

दर्शनोपरान्त कुछ समय जम्मू में व्यतीत कर वहां के बाजार तथा जनजीवन को देखा। सुचेतगढ़ का बोर्डर भी देखा। कुल मिलाकर यह यात्रा लम्बे समय तक यादगार बनने वाली रही। मम्मी का यह कहना समझ रहा हूं कि यात्राकाल में कम से कम सामान हो, छोटे बच्चे न हों, सबके पास सम्पर्की मोबाईल हों, एक मन वाले हों तथा समूहगत निर्णय और आसपास की अच्छी जानकारी हो तो निश्चिंतता बनी रहती है।

- वर्णन एवं फोटो अर्थांक भानावत

खोज-खबर

मूंछ का बाल

एक गांव में महफिल सजी। उसमें बैठे लोग आपस में अमल-तमाखू की मनुहार कर रहे थे। ऐसे लोग भी थे जो अपनी-अपनी दाढ़ी-मूंछ सम्हालते हुए अपनी आत्म-प्रशंसा कर रहे थे।

महफिल में उन्हें देख एक व्यक्ति ने अपनी मूंछ सहलाते कहा, पहले मूंछ आ गई तो अब दाढ़ी का क्या कहना अर्थात् यदि पहले मूंछ उग आती है तो दाढ़ी का महत्त्व जाता रहता है।

वहां बैठे एक व्यक्ति ने नेहले पे देहला दिया। उसके पहले मूंछ की बजाय दाढ़ी आई थी। वह बोला, पहले आई दाढ़ी तो उसने मूंछ बिगाड़ी। अर्थात् जिसके पहले दाढ़ी आ जाती है, मूंछ के बिना चेहरा बिगड़ जाता है।

यह सुनना हुआ कि उसके पास बैठे व्यक्ति ने तंज कसा। उसके लम्बी दाढ़ी थी। उसके बाल हवा में लहरा रहे थे। दाढ़ी पर हाथ जमाते वह बोला-

दाढ़ी दे दातार, फरहर लागै फूटरी।
मत दे चूंखा चार, कुल लजावै कूतड़ी।।

अर्थात् हे ईश्वर, ऐसी सुन्दर दाढ़ी दे जो हवा में फहराती रहे। जिस दाढ़ी के चार बाल हों, वह तो कुल को ही लज्जित करने वाली होती है।

यह बात उस व्यक्ति ने बड़े ध्यान से सुनी जो उस महफिल में बैठा हुआ था और उसकी दाढ़ी के बमुश्किल दस बाल थे। उसे यह बात अखरी और बड़ी दाढ़ी वाले की ओर इशारा करते बोला-

लम्बी दाढ़ी मुरखवों, लम्बे कान खरांह।
दाढ़ी रा दस बाल, खरा निशान नरांह।।

अर्थात् लम्बी दाढ़ी तो मूर्खों के होती है और लम्बे कान गधों के। इसी तरह दस बाल वाली दाढ़ी भी मूर्खों की ही होती है।

जब आपसी वदावदी होती है तो एक-दूसरा बढ़-चढ़कर बाजी मारने को मचल पड़ता है। उसी महफिल में ऐसा एक व्यक्ति बैठा था जिसकी दाढ़ी के मात्र तीन बाल थे। उसे उस व्यक्ति की बात बुरी लगी तब ताना मारते वह बोला-

घासफूस मगरे घणी, सुणलै सैण सगाह।
असल केसरी सिंह रे, साढ़ा तीन तगाह।।

अर्थात् हे समधी प्रवर, घने बाल मगरे पर घासफूस की तरह भद्दे लगते हैं। वीर पुरुष के तो असली केसरी सिंह की तरह मात्र साढ़े तीन बाल ही होते हैं। यह संवाद सुन पूरी महफिल मस्त हो गई।

साड़ियां मांय तीज तैवार रा ठाठ

कला रो अन्त नीं, पार नीं। केई नामी कलाकार आपणी कीरत छोड़ग्या। लोग अचम्बो करै के आदमी री कई बिसात जो एड़ी कलाकृति बणाय सकै। आंगल्यां रो कमाल जादू नै मात करै।

राजा राणा रे जमानै मांय केई तरै री कलावां फली-फूली अर कलाकारां रा कोई घराणां पनप्या। कोई पाथर मांय आपणी कला करतूत देतौ तो कोई लकड़ी नै तराश अजूबौ कारीगरी देतौ। चितारा भींता माथै चितराम कौर रंगरूप रा अणूता मांडणां मूंडै बोलावतो तो केई हाथी दांत मांय मनमोवणां चितर खोदता। दरजी कपड़ा लत्ता माथै भांत-भांत रा रंग-रंगीला ओपता कपड़ा रा चित्र सींवता। जरीदार साड्यां माथै भारी भरकम जड़ाव दैय बोहरा आपणी केई पींड्यां खपा दीधी।

साड्यां माथै भांत-भांत री कला कोरावण अर जरी सूं लूंठा चितराम काढ़ण मांय उदैपुर रा बोहरा कारीगर घणो नाम कमायौ। म्हारै देखण मांय राज परवार स्यूं जुड़ी केई साड्यां आई ज्यां माथै तीज तैवार अर राणाजी री ठसक-ठाठ रा प्रतीक चित्राम भींत ज्यूं चतरायोड़ा मिल्या।

इण मांय गणगौर माथै ओढ़ी जावणवाळी कसूमळ हरी पीळी गुलाबी नैं भूपाळशाही साड्यां ज्यां में गणगौर पूजती अर घूमर घाळती डावड्यां। पीछोला मांय नाव री असवारी। नाव में नाचती लुगायां अर राणाजी। साथै सरदार उमरावां को जळसो। सावण मांयली साड्यां मांय हींडा लेती बायां और ल्हैरिया रा निरत। होळी माथै फाग खेलण री छटा। गुलाळ अर पिचकारियां रा खेल। जळमगांठ माथै फ्हैरणवाळी साड्यां मांय श्रीजी म्हाराणा साब अर वारै सामै चंवर ढोलती डावड्यां अर नृत्त-गीतां री म्हेफिल सज्योड़ी।

हाथियां री सवारीदार साड़ी रो तो जवाब नीं। शिकार रा दृश्यां वाळी साड्यां भी दैखण में आई। प्राकृतिक दृश्य, जंगल, पहाड़, जानवर अर शिकारी। यांनै छेटी सूं दैख कोई नीं कै सकै कै ये साड्यां माथै काढ्या चितराम है। सगळाई चित्र जीता-जागता असल ओळखाण देवै। ई साड्यां सैफून कपड़ा री बणी थकी है। वजनी अतरी जांणै ज्यूं कोई नार आपणां आखा डील माथै गैणाऊं लद नै तुळै तो वींरौ वजन बढ़ै ज्यूं।

आज तो ई साड्यां दैखण नै ई नीं मिळै। अबै न वी लोक कलाकार अर शौकींदा राजा राणा ई रिया। साड्यां ई दैखण री कोरी कलपना रै जाई।

- म. भा.

भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री ने किया जिंक फुटबाल का दौरा

काश मुझे भी इस तरह का इंफ्रास्ट्रक्चर और सुविधाएं मिली होती : सुनील छेत्री

उदयपुर। भारत की राष्ट्रीय फुटबाल टीम के कप्तान और भारतीय फुटबाल के सबसे चर्चित चेहरों में से एक सुनील छेत्री ने उदयपुर के जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी का दौरा कर हिंदुस्तान जिंक द्वारा संचालित जिंक फुटबाल से जुड़े युवा फुटबालरों के साथ इंटरेक्टिव सेशन में हिस्सा लिया।

सुनील छेत्री ने कहा कि इस तरह की पहल से न केवल राजस्थान फुटबाल बल्कि भारतीय फुटबाल को भविष्य में नई ऊंचाई मिलेगी। मैंने राजस्थान में पहली बार कोई फुटबाल अकादमी देखी है और मैं यह देखकर वाकई खुश हूं कि यहां विश्वस्तरीय सुविधाएं मौजूद हैं। जिंक फुटबाल जैसी पहल में जिस तरह की विश्वस्तरीय सुविधा तैयार की गई है, उससे आने वाले समय में भारतीय फुटबाल को ऊपर ले जाने में मदद मिलेगी। मैं तो यही सोच रहा हूं कि जब मैं बड़ा हो रहा था, तब मुझे इस तरह की सुविधा और इंफ्रास्ट्रक्चर क्यों नहीं मिली। मुझे यकीन है कि यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बच्चे न सिर्फ राजस्थान में बल्कि राष्ट्र स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करेंगे। छेत्री को अपनी अकादमी में पाकर जिंक फुटबाल के युवा फुटबालर अपने आइकॉन के पास जाने और उनसे गुफ्तगू करने के लिए बेताब दिखे।

वेदांता फुटबाल के अध्यक्ष अन्नय अग्रवाल ने कहा कि वेदांता समूह की कंपनी- हिंदुस्तान जिंक ने इस विश्वास के साथ कि तकनीक और डेटा-संचालित विश्लेषण से समय पर हस्तक्षेप से देश में फुटबाल को बढ़ावा मिल सकता है, भारतीय फुटबाल को अगले स्तर पर ले जाने के लिए अपने सामाजिक विकास कार्यक्रम के हिस्से के रूप में जिंक फुटबाल कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम के मूल में एक पूर्णकालिक आवासीय अकादमी है, जिसमें 40 श्रेष्ठ अंडर-15 फुटबालरों में को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इन बच्चों का चयन राज्यभर में आयोजित ट्रायल्स के माध्यम से 5000 से अधिक बच्चों के बीच से चुना गया है।

जिंक के मुख्य वित्तीय अधिकारी स्वयम सौरव ने कहा कि हम जिंक फुटबाल को नई ऊंचाई पर ले जाने और राजस्थान में फुटबाल की दिशा में एक क्रांति लाने का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। सुनील छेत्री को अपने बीच पाना और जिंक फुटबाल के युवा खिलाड़ियों के साथ अपने अनुभव को साझा करते हुए देख कर अच्छा लगा। सरकार अपने स्तर पर खेल के लिए बेहतर प्रयास कर रही है लेकिन कार्पोरेट को आगे आना चाहिये जिसके लिए हिन्दुस्तान जिंक ने पहल की है। अकादमी में 25 करोड़ रूपये से अधिक खर्च कर ग्रामीण क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं को आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है जो कि अपनेआप में एक उदाहरण है। हम सभी को सामूहिक जिम्मेदारी से इसे पूरा करना होगा।

एचडीएफसी बैंक का सीएससी और कैट से एमओयू

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने सीएससी ईगवर्नेंस सर्विसेस इंडिया लि. और कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सीएआईटी) के साथ एक समझौतापत्र पर हस्ताक्षर किए, ताकि सीएआईटी सदस्यों को बैंकिंग उत्पाद व सेवाओं की पूरी श्रृंखला उपलब्ध कराई जा सके। सीआईएटी भारत में छोटे कारोबारियों एवं व्यवसायियों के लिए अग्रणी एडवोकेट है।

इसके लगभग 6 करोड़ सदस्य हैं। अपनी तरह का यह पहला जमीनी स्तर का अभियान ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाएगा और दूरदराज के इलाकों में भी छोटे कारोबारियों एवं व्यापारियों को लाभान्वित करेगा। एमओयू पर हस्ताक्षर एचडीएफसी बैंक की हेड - गवर्नमेंट व इंस्टीट्यूशनल बिज़नेस एवं ई-कॉमर्स, मिस स्मिता भगत, सीएससी के सीईओ, दिनेशकुमार त्यागी और कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सीएआईटी) के नेशनल सेक्रेटरी जनरल, प्रवीण खंडेलवाल द्वारा किए गए।

वीएमइंक्लुज़न तारा महिलाओं को कौशल प्रदान करेगा

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े अप-स्किलिंग प्रोग्राम्स में से एक, वीएमइंक्लुज़न तारा का उद्देश्य महिला इंजीनियरों को विराम के बाद अपने कॅरियर को पुन: प्रारंभ करने में मदद करना है। डंकन हेवेट, सीनियर वाईस प्रेसिडेंट एवं जीएम, एपीजे, वीएमवेयर ने कहा कि यह प्रोग्राम वीएमवेयर का एक अभियान है, जो महिलाओं को लेटेस्ट डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन तकनीकों में प्रशिक्षित करता है। इनमें क्लाउड मैनेजमेंट व ऑटोमेशन, डेटासेंटर वर्च्युअलाईज़ेशन, नेटवर्किंग एवं डिजिटल वर्कप्लेसेस शामिल हैं। इस प्रोग्राम की घोषणा अक्टूबर, 2018 में की गई और इसमें अब तक 3100 से ज्यादा महिलाएं एनरोलमेंट करा चुकी हैं। कोई भी महिला, जो कॅरियर से छह महीने या उससे अधिक समय का विराम ले चुकी है, वह इस प्रोग्राम के लिए आवेदन कर सकती है। उन्होंने कहा कि यह प्रोग्राम अंतर्राष्ट्रीय नॉन प्रॉफिट संगठन, वूमैन हू कोड के सहयोग से डिज़ाईन किया गया है, जो महिलाओं को टेक्नॉलॉजी के कॅरियर्स में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। इसका उद्देश्य अगले दो सालों में 15000 भारतीय महिलाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें दोबारा काम शुरु करने में मदद करना है। भारती एयरटेल, कॉग्निजैंट और डेल जैसे अग्रणी संस्थानों ने इस अभियान को अपना सहयोग दिया है।

पीयर सिटी लर्निंग वर्कशॉप आयोजित

उदयपुर। नगर निगम के सहयोग में बर्नार्ड वैन लीयर फाउंडेशन और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स द्वारा उदयपुर में पहली अरबन 95 पीयर सिटी लर्निंग वर्कशॉप आयोजित की गई। कार्यशाला में महापौर चंद्रसिंह कोठारी, आयुक्त अंकितकुमार सिंह, भारत की प्रतिनिधि रूश्दा मजीद सहित उदयपुर, भुवनेश्वर एवं पुणे के निगम प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

रूश्दा मजीद ने कहा कि सभी छोटे बच्चे जिंदगी में एक अच्छी शुरुआत के हकदार हैं। उनकी जिंदगी के शुरुआती पांच साल सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। एक अच्छी शुरुआत से प्रत्येक बच्चा अपनी पूरी क्षमता का लाभ उठा सकता है और एक स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज के लिए नींव तैयार कर सकता है। अरबन 95 पीयर सिटीज लर्निंग वर्कशॉप जैसी पहलों के साथ, हमारा उद्देश्य उदयपुर, पुणे और भुवनेश्वर के साथ सहयोग करना और प्रशिक्षणों एवं ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक मंच मुहैया कराना है, जो कि शहरों एवं उनके युवा निवासियों के बीच संबंधों को समझने के लिए आवश्यक है।

चंद्रसिंह कोठारी ने कहा कि हमें अरबन 95 शहरों- पुणे एवं भुवनेश्वर के भागीदारों का साथ मिला है जो उदयपुर के भागीदारों के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे। इस कार्यशाला के माध्यम से हम यह जान पायेंगे कि बच्चों से संबंधित आंकड़ों को कैसे एकत्रित किया जाता है और उदयपुर में छोटे बच्चों एवं उनके परिवारों के फायदे के लिए इसका इस्तेमाल कैसे किया जाता है। इस कार्यशाला का महत्व इसलिए है क्योंकि हम आमतौर पर सिर्फ युवाओं एवं बड़ों के नजरिये से ही योजना बनाते हैं और इसमें बच्चों के दृष्टिकोण को शामिल नहीं किया जाता। मेरा मानना है कि हमने अरबन 95 पहल के माध्यम से शहरी स्तर पर बच्चों के नजरिये से सोचना आरंभ किया है और मैं आश्वासन देता हूं कि इन आइडियाज को साकार करने एवं इन्हें क्रियान्वित करने के लिए हर संभव प्रयास किये जाएंगे।

जिंक़ को द सीएसआर जर्नल एक्सीलेंस अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ को कृषि एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रम समाधान तथा महिला सशक्तिकरण की सखी परियोजना के लिए 'द सीएसआर जर्नल एक्सीलेंस अवार्ड 2018' से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार केंद्रीय गृहराज्यमंत्री किशन रेड्डी ने विशाल अग्रवाल एवं नैरूति सांघवी को महिला सशक्तिकरण एवं शिव भगवान एवं अखिल नसीम को कृषि एवं ग्रामीण विकास के लिए सम्मानित किया। समारोह में भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण, ग्रामीण विकास और पंचायत राजमंत्री नरेंद्रसिंह तोमर, कैबिनेट मंत्री खाद्य प्रसंस्करण सुश्री हरसिमरत कौर बादल सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत

उदयपुर। अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन (एसीएफ) और हिंदुस्तान जिंक लि. ने रैपुरा दरीबा माइन में कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन किया। इस साझेदारी का उद्देश्य 3,000 बेरोजगार युवाओं को असिस्टेंट इलेक्ट्रिशियन, घरेलू डेटा एंट्री ऑपरेटर, सेल्स एसोसिएट, निहत्थे सुरक्षा गार्ड और माइक्रो फाइनेंस एग्जिक्यूटिव जैसे कुशल ट्रेड्स में प्रशिक्षण प्रदान करना है।

अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन की निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री पर्ल तिवारी ने कहा कि अंबुजा सीमेंट फाउंडेशन हिंदुस्तान जिंक लि. के साथ पांच साल की साझेदारी के लिए तत्पर है। यहां हम युवाओं को सक्षम बनाने के लिए रोजगार पूर्व और उसके बाद गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

सुश्री तिवारी ने कहा कि हिंदुस्तान जिंक के साथ यह हमारी पहली साझेदारी है और उनके साथ और ज्यादा सफल पहल विकसित करने की उम्मीद करते हैं। परिचालन के पहले साल कम से कम 220 युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है और उसके बाद के वर्षों में हर साल करीब 700 युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। दोनों संगठन इस लक्ष्य को लेकर प्रतिबद्ध हैं और रोजगार के स्थायी अवसर भी प्रदान करेंगे।

वृक्षारोपण कार्यक्रम में 1000 पौधों का रोपण

उदयपुर / बांसवाड़ा। बांसवाड़ा जिले के ग्राम कलियारी में रिलायंस फ़ाउंडेशन द्वारा वृक्षारोपण वन महोत्सव मनाया गया। ग्रामवासियों की ऐसी पहल को प्रोत्साहित करने के लिए वन विभाग ने भी भरपूर सहयोग दिया। उक्त कार्यक्रम में 400 ग्रामीणों ने 1000 पौधों का रोपण किया और अपनी परंपरागत हलमा परंपरा को जारी रखने की शपथ ली। लगाए गए पौधों की देखभाल की ज़िम्मेदारी कलियारी गाँव के हर परिवार, जय गुरु ग्राम संगठन व वन सुरक्षा समिति ने ली।

अध्यक्षता एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज, बांसवाड़ा देवेंद्र भाटी एवं डीएफओ डॉ. सुगनाराम जाट ने की। उन्होंने ग्रामवासियों के इस सामूहिक प्रयास की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने रिलायंस फ़ाउंडेशन के प्रयासों को जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए बेजोड़ बताया।

भंवर, पल्लो छोड़दो.....

(पृष्ठ एक का शेष)

यदि किसी ने लगा भी दी तो वह घर से बाहर नहीं निकलता। कहते हैं, इसकी सुगंध पर भूत-प्रेत के हावी होने का भय बना रहता है। पगथलियों के बीच की थोड़ी जगह बिना मेहंदी लगाये छोड़ी जाती है। यह स्थान भाई के लिए रहता है। यदि यहां मेहंदी लगा दी तो भाई पर भार आने की आशंका बनी रहती है। मेहंदी की टीकी लगाना खोड़ समझा जाता है। इसके सबसे बड़े दुश्मन मुर्गे हैं जो इसे चुग-चुग जाते हैं- 'मुरगलो मेहंदी चुगै जी म्हारा राज।'

मेहंदी श्रृंगार भी है और प्रसाधन भी। यह बड़ी गुणकारी है। जहां प्रेम देती है, वहां औषधि भी। गर्मी में यह शीतलता प्रदान करती है। अन्य कई रोगों के साथ-साथ यह चर्म रोग की भी बड़ी अच्छी दवा है। जानकार कहते हैं कि चर्म रोग तलुए और हथेलियों से प्रारम्भ होता है और मेहंदी भी यहीं दी जाती है। इसलिए जो मेहंदी लगाते हैं, वे बहुत सारे चर्म रोगों से बच जाते हैं। सफेद कोढ़ भी इससे ठीक होता कहा गया है।

माण्डनें कोई भी हों। चाहे मेहंदी के हों, चाहे जमीन के या घर-आंगन के हों। ये सब प्रकृति और मनुष्य के ऋतु-जीवन की कला-निधियों से बंधे होते हैं। चैती माण्डनों को ही लें। ग्रीष्म का प्रारम्भ होता है होली से। होली का रंग उमंग-चंग के साथ फागी-रागी है तो यह चंग अपने नाना प्रकारों में मेहंदी हथेलियों में भी चंगेगा और माण्डनों में भी आंगन को मण्डित करेगा। इन्हीं दिनों आम्र-मौर खिल उठते हैं और धीरे-धीरे खट्टी-मीठी केरियां निकल आती हैं। खजूर का फल खजूरा भी इसी मौसम की देन है। गर्मी अधिक पड़ने से पंखियों की घर-घर पूछ होने लगती है। होली के साथ-साथ गणगौर का त्यौहार भी इन्हीं दिनों आता है। गणगौर पर चूंदड़ी धारण कर औरतें माता गणगौर की पूजा कर सुहाग मांगती हैं। इसी अवसर पर नवोढ़े जंवाई न्यौते जाते हैं।

मोतीड़े बाजोट पर नाना गीत-गालों में जंवाई राजा को भोजन परोसा जाता है। उनके लिए शतरंज, चौपड़ की महफिल जुटाई जाती है। गौर का बेसणा, घेवर, शक्करपारा और गलीचा जैसे माण्डनें भी गणगौर के मुख्य मिष्ठान्न-बिछावे हैं। नये धान के रूप में गेहूं की बालियां तथा चने के बूंटे भी पहली बार होली की ज्वाला में सेके जाते हैं। बिच्छू भी इन्हीं दिनों बाहर आते हैं। ये सारे के सारे उपादान जिनसे हमारा जीवन सुख-दुखमय बनता है, माण्डनों के रूप में दुख-सुख से, सुख-दुख से होकर चितरा उठता है। मेहंदी जीवन की भी यही सबसे बड़ी सार्थकता है।

एक दिन भारतीय लोककला मण्डल संग्रहालय देख कुछ विदेशी मेरे पास आए और बोले- 'हमें उदयपुर बहुत अच्छा लगा और उससे भी अच्छा लगा आपका यह संग्रहालय और इसमें भी मेहंदी लगे बोर्ड पर मेहंदी के भांति-भांति के अंकनों ने तो हमें हमेशा-हमेशा के लिए मोह लिया। आपकी 'मेहंदी रंग राची' पुस्तक भी हमने देख ली, मगर इस मेहंदी की महिमा के बारे में हम कुछ और अधिक जानना चाहते हैं।' उन्हें बिठाते हुए मैंने कहा कि मेहंदी की महिमा तो स्वयं मेहंदी ही जान सकती है और मेहंदी से ही जानी जा सकती है।

यह मेहंदी चूंकि मेह ने दी है इसलिए मेहंदी कहलाई। मेह यानी बरसात। मेह बाबा के कई गीत हमारे यहां प्रचलित हैं। बाहर से हरी और भीतर से लाल मेहंदी का यह एक ही चमत्कार रूप-लावण्य नहीं है। इन्द्रधनुष के सारे के सारे रंग इस इन्द्र-पुत्री मेहंदी के रंग हैं।

लोकगीतों में वर्णन आता है कि सबसे पहले सुमेरू पर्वत पर मेहंदी का झाड़ उगा तो चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई दिया। मेहंदी को वसुदेव ने दूध से सींचा और बलराम ने उसकी देखभाल की। ओ पंसारी भाई, मेहंदी को सोने के पलड़े वाले चांदी के तराजू में तोलो। यह मेहंदी स्वर्ग से आई है। कितनी महक है इस मेहंदी में! कितनी सुरंगी है यह मेहंदी! तभी तो इसके बोने से लेकर पीसने-लगाने तक के कई बखान मिलते हैं।

मेहंदी सोने की सिलपट्टी पर पिसती है। महीन-महीन मखमल से छनती है और रतन कटोर में गंगाजल के साथ ओली-घोली जाती है। ऐसी महिमावती मेहंदी का क्या कहना! इसके आगे चिरमी, लाल, हिंगलू, सिंदूर, कुंकुम सब के सब पानी भरने लगते हैं।

चिरमी चुप व्है बैठगी,
या तो लाल रई सरमाय।
हार गयो छै हिंगलू, लाज्यां मरै सिंदूर।
कंकू रो कई रंग है, मेंदी सुरंगो रंग।।

अर्थात् चिरमी चुप होकर बैठ गई। लाल शर्म से झुक गई। हिंगलू हार मान गया। सिंदूर लज्जित हो गया और कुंकुम का तो रंग ही क्या है। मेहंदी का रंग अजब-अजूबा, सुरंगा है।

मेहंदी विवाहिता के सुख, सुहाग, सौभाग्य की लाली है। इसका महत्व नारी और पुरुष दोनों के लिए है। राहगीर से एक नवोढ़ा मेहंदी उचवाने को कहती है। राहगीर मेहंदी तो उचवा देना चाहता है पर उसके बदले में उसका आधा यौवन और आधा शैया-सुख चाहता है।

इस पर नवोढ़ा कहती है- 'मेरे ऊपर मेहंदी का रंग चढ़ा हुआ है, केसरिया लाल। तेरी इस हरकत पर तुझे क्या तेरे बाप तक को नहीं छोडूंगी। तेरी मूंछों पर अंगार धर दूंगी और तेरे पिता की दाढ़ी जला दूंगी।' यह सुनते ही राहगीर भूत की तरह भाग उठता है। कितना कमाल है मेहंदी के रंग में!

बहन ने भाई के हाथों मेहंदी दी और उसे ससुराल भेजा। सालियों ने बहनोई के हाथों को निरखा और पूछा-'किसने माण्डी है इतनी अच्छी मेहंदी?'बहनोई ने बहन का नाम लिया तो वे बोल पड़ीं- 'ऐसी सगुणी बहन को चूंदड़ ओढ़ाओ और चूड़ा पहनाओ जिसने इतने सुन्दर प्यारे-प्यारे हाथ माण्डे हैं।'

सुहागनों के मेहंदी रचे हाथों पर पति भी रीझा है। उसने कहा- 'अपने ये मेहंदी-हाथ मेरे हृदय पर रख दे। मैं इस पर पन्ने-जवाहरात न्यौछावर करदूं।' परिणीताओं को अपने परणिये से भी अधिक प्यारी मेहंदी है। वे अपनी मेहंदी का गुणगान करती हैं तो कह उठती हैं- रसिया बालम, मेरा पल्ला छोड़ दो, मेरे हाथों में मेहंदी रची हुई है- 'भंवर पल्लो छोड़दो म्हारे हाथां में रचरई मेहंदी, भंवरजी, पढ़ना-लिखना छोड़ मेरे मेहंदी भरे हाथों को तो निरखो जरा! मेरा बन्ना मेहंदी जैसी रचने वाला है। मैं उसे मुट्ठी में दबाकर रखूंगी।'

मेहंदी का रंग और मेह का संग कुछ ऐसा ही होता है। इसका आनंद और हुलास-उल्लास शब्दों में बांधने का नहीं, हृदय में साधने का है। मेहंदी के इसी माहात्म्य के फलस्वरूप इसे घोलने के लिए अर्जुन एक बड़ा कुण्ड लाता है और तीनों लोकों में यह खबर फैल जाती है। मेहंदी के छींटे मात्र से भाग्य उदित होते हैं। वासुदेव, बलराम तक अपनी पगड़ियों को मेहंदी के छींटों से पवित्र करते हैं।

मेहंदी प्रत्येक संस्कार अनुष्ठान की पावनी पाहुनी है। इसके बिना सब अधूरे हैं। इससे जन्म-परण-मरण सब सार्थक होते हैं। मेहंदी की थपकियों से थापे पूरे जाते हैं। इन्हीं थापों में गणगौर चूड़ा चूंदड़ बनाये रखती है। दशामाता अवदशा से बचाती है। करवा, नागपांची, दीयाड़ी, दीवाली, चौथ, शीतला आदि सबके सब देव-देवी मेहंदी की महक से रीझ कर स्वयं ऋद्ध-सिद्ध होते हैं और गृह-परिवार को ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि प्रदान करते हैं। मेहंदी रची रमणियों की छटा बादाम की प्रफुल्ल शाखा सी लगती है। मेहंदी से मेहंदीबाई और मेहंदालाल दोनों ही रंगते, रचते, रूपते सुवासित होते हैं।

यों तो मेहंदी सब ऋतुओं को भाई है। सर्वऋतु विलासी है परन्तु यदि मौसम सावन का हो तो फिर कहना ही क्या? इस मौसम में सब फूलते हैं। प्रकृति और पुरुष, फूल-फल फूट-फूट पड़ते हैं। प्रकृति के समग्र उपादान-सरोवरों तथा ताल-तलैयों पर चलती जल-लहरियां, महका मेहंदी झाड़, कमल बेल, फूल-सिंघाड़े, कूकते मोर, किल्लोलती मछलियां, चटाई का बिछावन, चौपड़ और चरती-भरती का खेल, ये सब के सब मेहंदी की हथेलियों में भी रंग आते हैं।

सावणी तीज तथा कजली तीज पर हींडों-झूलों की बहार, साज-श्रृंगार और गीतों-झालों में प्रियतम का बुलावा- 'अनोखा सायबजी, हो भविनय झालो देऊं घर आव।' मेहंदी की आग और राग दोनों रह-रह कर सताने वाली होती है। यह मौसम अकेलों का नहीं है। अकेली प्रियतमा के लिए तो यह मौसम मेहंदी बिन जानलेवा सा है। कहा भी है-

मेहंदी ने गजब दोनों तरफ आग लगा दी,
तलवों में उधर और इधर दिल में लगी है।

प्रिय मेहंदी के पत्ते-पत्ते पर अपने हृदय की बात लिखता रहा। इस आश में कि धीरे-धीरे कभी तो प्रियतमा के पास उसकी यह बात पहुंचेगी। सचमुच यह मेहंदी एक ऐसी रंगरेजन है जो कई अंगों-रंगों को रंगती हुई भी नित नये रंग लिये होती है। प्रेम का इतना जबर्दस्त रंग अन्यत्र कहां मिलेगा? इसीलिए भावज आशीष देती कहती है- 'जग लाली रहे जैसे रंग मेहंदी।'

हमारे देश में ही नहीं अब तो विदेशों में भी मेहंदी बड़ी महिमा ला रही है। कोई वक्त था जब भीलवाड़े का संगीत कला केन्द्र प्रतिवर्ष ही मेहंदी-माण्डनों की प्रतियोगिताएं आयोजित करता था। वहां ऊंचे-नीचे घरों की बीस-चौबीस दर्जन महिलाएं एक संग मेहंदी रचती थीं। अब तो कई कॉलेजों तथा सार्वजनिक रंग-प्रतिष्ठानों में भी प्रतियोगिताओं के माध्यम से मेहंदी मेहंदाई जाने लगी है।

सावन की सुंरगी नार और फिर उसके हाथ-पांवों पर मेहंदी का बारीक-बारीक झरमरता सौंदर्य अंकित हो तो क्या कहना! अकेली मेहंदी ही ऐसी है जिसके द्वारा महिलाएं इस अग-जग के सारे सौंदर्य, सुख, साज-श्रृंगार, ओढ़न-पहनन, कुसुम-कातन, चहकता पक्षी मन, सूर्य-तारे सम्बन्धी समग्र स्वप्न-यथार्थ को अपनी हथेलियों में रखकर जो असीम सुख, आनंद प्राप्त करती हैं उसकी तुलना में इन्द्राणी, अप्सराएं और देव-कन्याएं भी क्या प्राप्त करती होंगी? मेहंदी तो मेहंदी है। उसे न कोई मोल पाया है, न कोई तोल पाया है।

स्कूली बालिकाओं को नृत्य पोशाकें भेंट

उदयपुर। जयसमंद के समीपवर्ती देवपुरा के उच्च माध्यमिक विद्यालय में उदयपुर के शाकुन्तलम संस्था की प्रमुख डॉ. शकुन्तला

पंवार ने छात्राओं को लोकनृत्य की पोशाकें भेंट की। बालसभा के दौरान डॉ. शकुन्तला ने अपने उद्बोधन में कहा कि राजस्थान पूरे देश में ही नहीं विश्व में राजस्थानी लोकनृत्यों के लिए विख्यात है। इस विरासत का संरक्षण और रखरखाव पुरुषों से अधिक महिलाओं ने किया है। इस अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ. गोविन्दसिंह शक्तावत, प्राध्यापक दुर्गाशंकर चौबीसा, सुनीता शर्मा, हिम्मतसिंह राठौड़ तथा शाकुन्तलम के सचिव गोवर्धन पंवार उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. शकुन्तला ने भारतीय लोककला मण्डल में रहते देश के सभी हिस्सों और विदेश के 28 देशों में लोकनृत्यों के प्रदर्शनों द्वारा अनेक राष्ट्राध्यक्षों से पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किया।

'स्वरांजलि' पुस्तक का विमोचन

उदयपुर। भगवान एकलिंगनाथजी की नगरी कैलाशपुरी में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर

पर श्री एकलिंगजी ट्रस्ट, उदयपुर की ओर से प्रकाशित 'स्वरांजलि' नामक पुस्तक का विमोचन ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किया। इस अवसर पर मेवाड़ परिवार के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, निवृत्तिकुमारी मेवाड़ के साथ ही देशभर से समारोह में स्वर लहरियां

बिखेरने आये कलाकारों में असित-अमित गोस्वामी, ध्रुपद गायक उदय भावलकर, मिलिन्द चितल व सहयोगी कलाकार आदि उपस्थित थे।

श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने ख्यातनाम कलाकारों से विस्तृत चर्चा की तथा लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कलाकारों का अभिनंदन किया। सच तो यह है कि ऐसे आयोजनों से ही परम्पराओं को जीवन्त रखा जाकर युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति-संस्कार से रूबरू करवाया जा सकता है।

पीआईएएफटी के छात्रों के परिधान पहन रैंप पर उतरे देश के जाने माने मॉडल्स-

-एल्युमिनेटी-2019 में आधुनिक डिजाइनर परिधानों से रूबरू हुए उदयपुराईट्स-

-पंचतत्व थीम पर क्लासिक विंटेज, रिजोर्ट वियर और इण्डो वेस्टर्न आधारित रहा फैशन शो-

उदयपुर। पेसिफिक विश्वविद्यालय के पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी की ओर से सुखाड़िया रंगमंच टाउन हॉल में वार्षिक समारोह एल्युमिनेटी-2019 फैशन शो 20 जुलाई को आयोजित किया गया। शो के दौरान देश के ख्यातनाम मॉडलों ने पीआईएफटी के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गये परिधान पहन कर कैटवॉक किया।

फैशन शो का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ दिनेश खराड़ी, इएसआई अधिकारी बीसी मीणा, डॉ जीएनएम माथुर प्राचार्य बीएड कॉलेज, दिल्ली के फैशन डिजाइनर अश्फाक अहमद, श्रीमती लीलादेवी अग्रवाल, पाहेर के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी की डायरेक्टर शीतल अग्रवाल ने किया। शो के कोरियोग्राफर एवं डिजाइनर गगन कुमार थे। प्रारंभ में पेसिफिक के विद्यार्थियों ने गणेश वन्दना प्रस्तुत की।

पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल ने कहा कि पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी द्वारा उदयपुर में फैशन के विद्यार्थियों को हमेशा आधुनिक डिजाइनर परिधानों को तैयार करने और उन्हें जानेमाने मॉडल्स द्वारा प्रदर्शित करने के उद्देश्य से यह आयोजन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है।

इस मंच के माध्यम से उदयपुर में फैशन के टेलेंट को आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिला है। संस्थान के विद्यार्थियों ने इस समारोह को लेकर कई दिनों पूर्व ही तैयारियां शुरू कर दी थी जो आज रंग लाई है। पीआईएफटी के कई विद्यार्थी आज फैशन के क्षेत्र में डिजाइनिंग से संस्थान का नाम रोशन कर रहे हैं जो हमारे लिए गर्व की बात है।

प्रकृति के पांच तत्वों से प्रेरित 'द पंचतत्व' थीम पर आधारित इस फैशन शो में सबसे पहले पृथ्वी पर आधारित धरा के अंतर्गत क्लासिक विंटेज परिधानों का प्रदर्शन किया गया जिसमें भूरे रंग के टोन को इस्तेमाल करते हुए आकर्षक डिजायनर वस्त्र पहने जब मॉडल्स रैंप पर उतरी तो सभी ने उनका स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट के साथ किया।

इसके बाद पानी पर आधारित प्रिन्ट और हल्के नीले रंगों का प्रयोग किये हुए परिधानों बारी थी जिन्हें विद्यार्थियों ने गतिशील और प्रभावशाली बनाने के लिए जल के तत्वों का प्रयोग कर कमाल के संयोजन से तैयार किया। इन परिधानों को प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा।

कार्यक्रम में रणबंका और हंस मत पगली फिल्म के बाल कलाकार अव्य अग्रवाल ने पाब्लोज़ कोर्ट नाटक का मंचन किया जिसकी उपस्थित दर्शकों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

इसके बाद अग्नि से प्रेरित परिधानों को प्रस्तुत किया गया। इसमें केसरिया और पीले कपड़ों पर कांच एवं गोटा पत्ती का उपयोग किया गया। मॉडल्स ने पारंपरिक प्रिंट का उपयोग कर भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत किया जिसे सभी की सराहना मिली।

वायु थीम पर आधारित सफेद और ग्रे कलर से तैयार इण्डो वेस्टर्न परिधानों को पहन जब ख्यातनाम मॉडल्स ने मंच पर कैटवॉक किया तो ऐसा लगा जैसे पंचतत्व की प्रतिकृति उभर आई हो।

अंतिम राण्उड अंतरिक्ष में व्योम थीम पर आधारित चमकदार और आकर्षक परिधानों को नन्हे मुन्हे बच्चों ने जब मंच पर पहनकर माहिर मॉडल्स की तरह प्रस्तुत किया तो दर्शक दीर्घा में बैठे लोगों ने उनका तालियों से उतहवर्धन किया।

सभी राउंड में ज्वेलरी सेटअप और मैकअप को लेकर खासी मेहनत दिखाई दी जिसने दर्शकों को ज्वेलरी में ताजापन का अहसास करवाया। उन्होंने थीम बेस्ड और परंपरागत कोरियोग्राफी के साथ ड्रामा, इमोशन को जीवंत करते हुए लाइट और म्युजिक का शानदार इस्तेमाल किया। डिजाइनर गगन

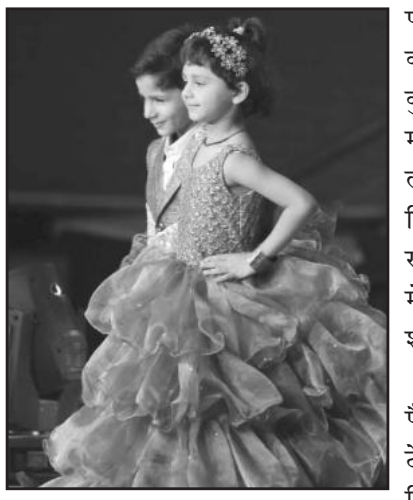

कुमार के निर्देशन में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने लेटेस्ट और ट्रेंडी परिधानों से रू-ब-रू करा फैशन को जीवंत कर दिया। इस दौरान विद्यार्थियों की एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुति ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। समारोह में बेस्ट स्टूडेंट्स का अवार्ड कुसुम, दीपिका लोढ़ा, फैशन के लिए किरण चंपावत, फाइन आर्ट जयश्री रामावत और अर्पणा मेहता इंटीरियर के लिए दिया गया। संचालन पीआईएफटी के कविश कोठारी एवं दिव्य भवानी ने किया। एल्युमिनेटी-2019 फैशन शो में इंस्टीट्यूट के छात्रों ने शीतल अग्रवाल के निर्देशन में विभिन्न गतिविधियों में अपनी छाप छोड़ी।

पेसिफिक विश्वविद्यालय के वित्त सचिव आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल एवं अतिथियों ने फैशन शो के दौरान बेस्ट डिजाइनर फिमेल राउंड में प्रथम नेहा कुमारी द्वितीय अर्शिया खान,एवं तृतीय शालीनी शर्मा को पुरस्कृत किया।

बेस्ट डिजाइनर मेल राउंड में दीपिका लोढ़ा प्रथम, विद्या डांगी द्वितीय एवं पायल डाबर तृतीय रही। बेस्ट थीम अवार्ड में प्रथम रूबेल पंवार, नोशिन शेख, कृतिका कपुर, कविता टांक, द्वितीय मेघा सप्रा, कुसुम सुथार, शगुन माहेश्वरी,चेतना वेरागी, तृतीय हर्षा लखारा,शिवांगी जोशी, हीना डांगी, किरण डांगी एवं देशन पितलीया रहे। बेस्ट डिजाइनर किड्स राउंड में प्रथम आर सुधा, द्वितीय आयुशी शर्मा एवं तृतीय कृति सिंघवी रही।

शो में पीआईएफटी फेकल्टी पैसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी के डिजाइनर एवं प्रिंसिपल यशवंतकुमार जैन, मुकेशकुमार औदिच्य, डॉ प्रकृति दीक्षित पोरवाल, आर्किटेक्ट हितेष मिस्त्री, संगीता सिंघवी, राजेश्वरी लोढ़ा, कोमल सुखवानी, सोनू सेठिया, नाजनिन खान, राजेश शर्मा और प्रकाश शर्मा का विशेष योगदान रहा।

- डॉ. तुक्तक भानावत

क़मर मेवाड़ी को डॉ. विद्यासागर शर्मा सृजन सम्मान

कवि-कथाकार क़मर मेवाड़ी का अस्सी वर्ष पूर्ण होने पर राजस्थान साहित्य परिषद द्वारा कांकरोली में भव्य समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्रीराम दवे, विशिष्ट अतिथि डॉ. कृष्णकुमार 'आशु' डॉ. मंगत बादल, डॉ. अरूण शहैरिया 'ताइर', प्रतापसिंह सोढ़ी थे। अध्यक्षता डॉ. वेदप्रकाश शर्मा ने की।

मधुसूदन पाण्ड्या ने अतिथियों का स्वागत किया। सृजन सेवा संस्थान

श्रीगंगानगर द्वारा कमर मेवाड़ी को 'डॉ. विद्यासागर शर्मा सृजन सम्मान' के तहत शॉल, प्रशस्तिपत्र एवं ग्यारह हजार रूपये नकद प्रदान किये गए। क़मर मेवाड़ी ने आयोजन को अपनी जिन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण क्षण बताया।

समारोह में त्रिलोकी मोहन पुरोहित, डॉ. नरेन्द्र निर्मल, श्रीराम दवे, देशबन्धु आचार्य, चतुर कोठारी, फतहलाल गुर्जर 'अनोखा', अफजल खां अफजल, किशन काबरा आदि ने क़मर मेवाड़ी के रचना-कर्म को रेखांकित कर साहित्य में उनके योगदान की चर्चा की।

गीतांजली में कैंसर की सफल सर्जरी

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के गेस्ट्रोएंटरोलोजी विभाग के जीआई सर्जन डॉ कमल किशोर ने आबू रोड़ निवासी 84 वर्षीय भूरसिंह चौहान के पेट में दूसरी स्टेज के कैंसर का सफल ऑपरेशन कर स्वस्थ्य जीवन प्रदान किया। डॉ. कमल ने बताया कि रोगी की गेस्ट्रोएंटरोलोजिस्ट डॉ पंकज गुप्ता ने एंडोस्कोपी की जांच की थी परंतु उसमें कुछ नहीं आया। वहीं तीन बायोप्सी भी की गई परंतु कैंसर का निदान न हुआ। सीटी स्केन की जांच में पेट में दूसरी स्टेज के कैंसर की पुष्टि हुई। ऑपरेशन से पूर्व चार यूनिट ब्लड चढ़ाया गया। फिर सर्जरी की गई। ऑपरेशन में डॉ. कमल के साथ एनेस्थेटिस्ट डॉ. वी. एस. राठौड़ एवं ओटी इंचार्ज हेमन्त गर्ग का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सीईओ प्रतीम तम्बोली ने कहा कि यदि कोई रोगी इस उम्र में भी कैंसर जैसी जटिल बीमारी से लड़कर ठीक हो सकता है तो किसी भी रोगी को हार नहीं माननी चाहिए।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।